श्रीश्रीजगन्नाथदेवका विग्रह तथा श्रीमन्दिरकी पुराणकथा

(प्रस्तोता: आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान)

श्री श्रीजगन्नाथदेव का इतिहास स्कन्दपुराण के उत्कल खंड के अन्तर्गत पुरूषोत्तम माहात्म्य अंश में वर्णित है। श्वेतवराह कल्प के स्वायम्भूव मन्वन्तर के प्रथम सत्ययुग में अवन्तिदेश में इन्द्रद्युम्न नामक राजा का निवास था। वे ब्रह्मा के अधस्तन पंचम पुरुष थे। इन्द्रद्युम्न विभिन्न देश व स्थानों के पर्यटन

की कथा को बड़े चाव से सुना करते थे । एक दिन एक परिव्राजक ब्राह्मण तीर्थभ्रमण करते हुए अवन्तिदेश पहुँचकर राजा के अतिथि बने । राजा ने अतिथि की यथोचित सेवा की और सविनय पूछा- 'भगवन! तीर्थपर्यटन के सिलसिले में बहुत देश-दुनिया की आपने सैर की है। उन सभी देशों में आपने जो आश्चर्यजनक वस्तु या घटना देखी हो, कृपया बताएँ ।'

राजा की बात सुनकर ब्राह्मण ने कहा- 'महाराज, देश पर्यटन करते समय मैंने जितनी भी आश्चर्यजनक घटनाएँ देखी, उनमें दक्षिण समुद्र के तटवर्ती उत्कलदेश का विवरण ही सबसे अद्भुत है। दक्षिणवाहिनी ऋषिकुल्यादेवी एवं सुवर्णरेखा व महानदी का मध्यवर्ती देश 'पुरूषोत्तमक्षेत्र' के नाम से प्रख्यात है। इस क्षेत्र का परिमाण दस योजन है। वहाँ 'नीलगिरि ' नामक एक पर्वत अवस्थित है। यह पर्वत चारों दिशाओं से घने जंगलों से ढँका हुआ है। वहाँ अक्षयवट नामक एक अत्यन्त प्राचीन और सुविशाल वटवृक्ष

asvsansthan

विराजमान है। साथ ही रोहिणीकुंड नामक एक सरोवर भी वहाँ अवस्थित है। उसी सरोवर के पूर्व तट पर नीलकान्तमणि से निर्मित 'नीलमाधव' नामक भगवान वासुदेव का एक मनोहर व चमत्कारी विग्रह विराजमान हैं। जो भी मनुष्य रोहिणीकुंड में स्नान कर नीलमाधव का दर्शन करता है, उसे एक सहस्र अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

विश्वावसु नामक एक वयस्क शवर नीलमाधव की अर्चना किया करते हैं। एक दिन मैंने देखा, एक कौआ प्यासा था तो उसने रोहिणी कुण्ड का जल पान किया। कुण्ड के जल की ऐसी महिमा है कि उस जल के स्पर्श मात्र से वह कौआ अपना पक्षीदेह परित्याग कर भाग्यशाली बन भगवान का पार्षद देह प्राप्त कर वैकुंठ धाम प्राप्त किया।

राजा इन्द्रद्युम्न ब्राह्मण के निकट इस अपूर्व वृत्तान्त को सुनकर अपने पुरोहित से कहा - "भगवन, आपने परिव्राजक से इस यात्रा वृतान्त की सारी बातें सुनी। आपको उत्कल देश जाकर भगवान नीलमाधव से सम्बन्धित सारी जानकारी लानी होगी।'' राजा की बात सुनकर पुरोहित ने कहा - 'महाराज, मैं देशभ्रमण में उतना दक्ष नहीं हूँ। मेरा छोटा भाई विद्यापति हर समय विभिन्न देशों में पर्यटन करता रहता है। वही नीलमाधव सम्बन्धित सारी जानकारी आपको ला देगा।" पुरोहित के कथनानुसार राजा ने विद्यापति को उत्कलदेश में प्रेरित किया। विद्यापति उत्कल जाकर विश्वावसु नामक शवर के साथ भेंट की और उनका मकान खोज निकाला । विश्वावसु ने विद्यापति का यथोचित

asvvsansthan

सत्कार करते हुए उनके आगमन का कारण पूछा। विद्यापति ने तब कहा 'अवन्ति देश के अधिपति राजा इंद्रद्युम्न ने मुझे यहाँ भेजा है। इस नीलाचल पर साक्षात् मुक्तिप्रद भगवान नीलमाधव विराजित हैं। मैं उन्हें दर्शन कर धन्य होऊँगा और उनका सारा विवरण जानकर अपने राजा से जाकर कहूँगा। मेरे लौटने पर महाराज इन्द्रद्युम्न, प्रभु नीलमाधव के दर्शनार्थ पधारेंगे। प्रभु नीलमाधव के बारे में जबसे महाराज ने सुना है, तभी से वे प्रभु - दर्शन के लिए बड़े व्याकुल हैं। विश्वावसु विद्यापति की सारी बातें सुनकर गम्भीर हो गए। भारी आवाज में उन्होंने कहा- "हाय ! इतने दिनों के बाद नीलमाधव मेरे प्रति विमुख हो गए।" विद्यापति ने पूछा-'' भक्त राजा इन्द्रद्युम्न के दर्शन करने से नीलमाधव आपके प्रति विमुख क्यों होंगे ? क्या राजा द्वारा प्रभु नीलमाधव के दर्शन करने पर आपको कोई हानि होगी ?"

विश्वावसु ने भरी हुई आवाज में कहा- "महाशय, मेरे सर्वनाश के दिन आ गए हैं।

aswsansthan

यहाँ ऐसी किंवदन्ती प्रचलित है कि अवन्ति देश के राजा इन्द्रद्युम्न नीलमाधव दर्शन करने के लिए आएंगे, परन्तु उन्हें वे देवता नहीं मिलेंगे। नीलमाधव राजा को दर्शन नहीं देंगे। राजा के उत्कलदेश पहुँचने से पहले ही भगवान नीलमाधव स्वर्णबालुका में विलीन हो जाएँगे। इन्द्रद्युम्न नीलमाधव का दर्शन न पाकर अत्यन्त विचलित होकर विलाप करने लगेंगे। उसी समय आकाश से उनके प्रति दैववाणी होगी कि वे एक सहस्र अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न करें। राजा यथार्थ ही एक सहस्र अश्वमेध यज्ञ करने पर भगवान 'दारूब्रह्म' रूप में प्रकाशित होंगे। इतने दिनों तक भगवान नीलमाधव ने जो मुझ पर कृपा की थी, उससे मुझे अब वंचित होना होगा। सब प्रभु की इच्छा ।"

जिस पर्वत गुफा में भगवान नीलमाधव विराजित थे, वहाँ विश्वावसु विद्यापति को लेकर गए । विद्यापति अवाक होकर भगवान नीलमाधव की अपूर्व मूर्ति के दर्शन किए और उनकी आराधना की । विश्वावसु ने उन्हें भगवान का प्रसाद तथा निर्माल्य प्रदान किया।

asvsansthan

विद्यापति ने उसे परम भक्तिभाव से ग्रहण किया तथा मस्तक पर निर्माल्य धारण की। प्रभु - दर्शन की परम पवित्रता उनके तन-मन
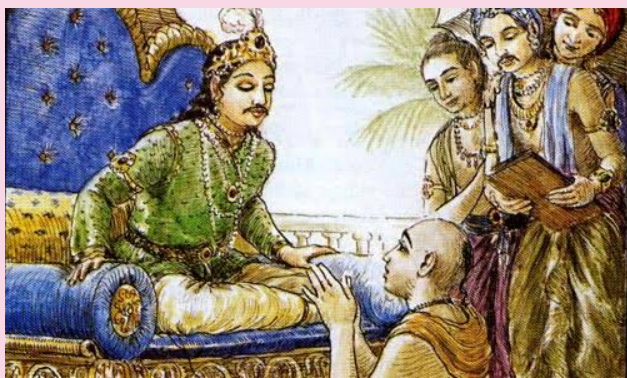
में छाई हुई थी। विद्यापति अवन्ति लौटकर राजा इन्द्रद्युम्न के पास गए। उन्होंने राजा को नीलमाधव का समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। विद्यापति ने राजा को भगवान नीलमाधव का प्रसाद एवं निर्माल्य दिया। इन्द्रद्युम्न प्रभु का प्रसाद तथा निर्माल्य मस्तक पर धारण कर पुलकित हो उठे । वे अपने-आपको धन्य तथा कृतार्थ महसूस करने लगे। परिव्राजक ब्राह्मण ने नीलमाधव की महिमा का जो वर्णन किया था, विद्यापति ने इन्द्रद्युम्न को वही सारी जानकारी प्रदान की। परन्तु विश्वावसु ने विद्यापति से भगवान नीलमाधव के अन्तर्धान का जो विवरण प्रस्तुत किया था, उसे विद्यापति ने पुनः राजा से नहीं कहा। इन्द्रद्युम्न नीलमाधव का माहात्म्य सुनकर अत्यन्त प्रभावित हुए और भगवान के दर्शन के लिए

अत्यन्त व्याकुल हो उठे।

इन्द्रद्युम्न के द्वारा भगवान 'दारुब्रह्म' रूप में आविर्भूत होंगे यह तथ्य ब्रह्मा जब अवगत हुए तो उन्होंने देवर्षि नारद को इन्द्रद्युम्न के पास भेजा। देवर्षि अवन्तिदेश पहुँचकर राजा इन्द्रद्युम्न से मिले तथा भगवान के दारूब्रह्म रूप में प्रकाशित होने के दिव्य-दैवी अभिप्राय को बताकर आए। इस दिव्य अभिप्राय के बारे में सम्यक अवगत होकर इन्द्रद्युम्न ने अपनी राजधानी नीलाचल में स्थापित की। संगी-साथी, सेवक व विश्वस्त अनुचरों के साथ नीलाचल की ओर आते समय उन्हें संवाद पहुँचाया गया कि नीलमाधव बालुका तले अन्तर्धान कर चुके हैं। यह सुनकर महाराज अत्यन्त दुखी और व्याकुल हो
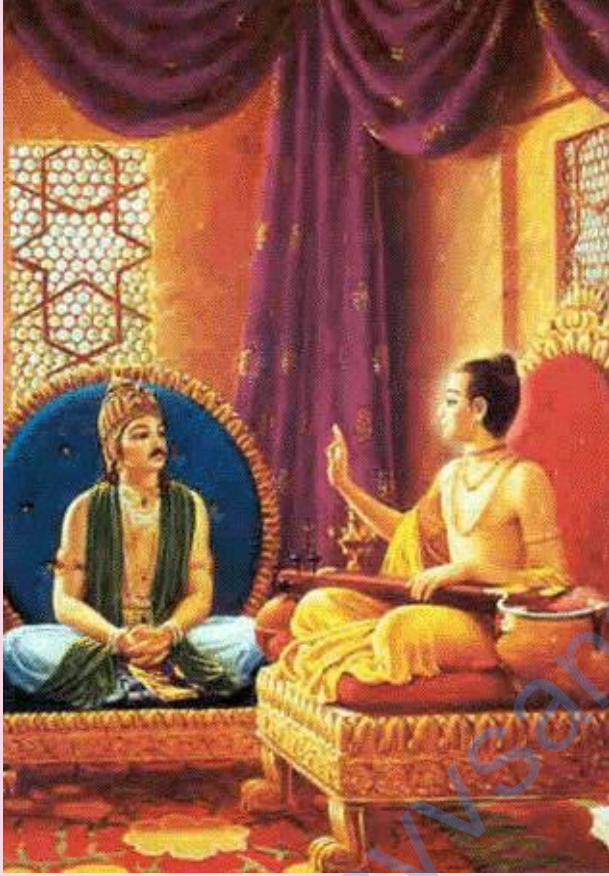
asvvsansthan

उठे। उन्होंने उपवासी रहकर अपना जीवन त्यागने का संकल्प किया। इस पर देवर्षि नारद प्रकटित होकर बोले- "महाराज! आप अपने प्राणों को त्यागने का संकल्प छोड़ दें। यम की प्रार्थना पर भगवान नीलमाधव स्वर्णबालूका में अन्तर्धान कर चुके हैं। अब और वे इस नीलमाधव मूर्ति में प्रकटित नहीं होंगे। अब पतितों का उद्धार वे दारूब्रह्म के तौर पर, उसी नवीन दिव्यरूप में करेंगे। आप नृसिंहदेव की एक मूर्ति स्थापित कर एक सहस्र यज्ञ का अनुष्ठान कीजिए । यज्ञ समाप्त होते ही भगवान् दारूब्रह्म-रूप में आविर्भूत होंगे। "

देवर्षि की बातों से इन्द्रद्युम्न आश्वस्त हुए। उन्होंने नृसिंहमूर्ति की स्थापना करते हुए एक सहस्र यज्ञानुष्ठान सम्पन्न किया। यज्ञ के अन्त में राजा यथाविहित स्नान की व्यवस्था कर रहे

asvsansthan

थे, ऐसे समय संवाद मिला कि समुद्र में एक अपूर्व दारू (काठ / पेड़ का तना) बहकर किनारे आया है। उस काठ के सभी अंगों में शंख, चक्र, गदा और पद्म नैसर्गिक रूप से उकेरे हुए थे। इस दिव्य काठ के टुकड़े के बारे में सुनकर इन्द्रद्युम्न समुद्रतट की तरफ दौड़ पड़े तथा अत्यन्त समादर व समारोह से पूजा सम्पन्न कर उस अपूर्व दारू को लाकर एक भव्य वेदी पर स्थापित किया ।

राजा इन्द्रद्युम्न एवं देवर्षि नारद भगवान का विग्रह निर्माण करने के लिए योग्य मूर्तिकार की खोज करने लगे। इस समय आकाशवाणी हुई- “हे राजन! भगवान की मूर्ति बनाने के लिए अधिक चिन्तित न हों। जिस भव्य वेदी पर वह काठ विराजमान है, उसे एक बड़े

asvsansthan

आवरण से ढँक दो। मूर्ति निर्माण के लिए एक वृद्ध कारिगर उपस्थित होंगे। उन्हीं को मूर्ति-निर्माण का दायित्व सौंपना। यह काम समाप्त होने में पन्द्रह दिन लग सकते हैं। इन पन्द्रह दिनों में वेदी के आवरण के भीतर उस वृद्ध मूर्तिकार के अलावे कोई वहाँ प्रवेश कर नहीं सकता। भगवान का विग्रह अत्यन्त गुप्त रूप से निर्मित होगा। जो कोई भी इस दिव्य - निर्माण को देखेगा, उसका भीषण अकल्याण होगा।"

कुछ दिनों बाद वह वृद्ध मूर्तिकार आकर उपस्थित हुआ और पन्द्रह दिनों में जगन्नाथ, बलराम, सुभद्रा तथा सुदर्शन चक्र इन चार मूर्तियों का निर्माण सम्पन्न किया । इन्द्रद्युम्न और देवर्षि नारद तब देवता प्रतिष्ठा हेतु ब्रह्मा को लाने ब्रह्मलोक गए। वे ब्रह्मा की सभा में

पहुँचकर देखें कि वहाँ सामगान का गायन हो रहा है। सामगान समाप्त होने पर उन्होंने ब्रह्मा को मर्त्य पर आकर जगन्नाथ की प्रतिष्ठा हेतु प्रार्थना की। ब्रह्मा ने कहाआप दोनों ब्रह्मलोक में आकर जितना समय सामगान श्रवण में व्यतीत किए हैं, उसी थोड़े समय में भूमण्डल पर एक मन्वन्तर बीत चुका है। आप लोग स्वायम्भूव मन्वन्तर में यहाँ आए थे, पर अब तक स्वारोचिष मन्वन्तर का प्रथम सत्ययुग प्रारम्भ हो चुका है।'' ब्रह्मा ने इन्द्रद्युम्न से कहा-"अभी धरती पर तुम्हारे वंश का कोई भी जीवित नहीं है। अनेकानेक भूपति अपने राज्यशासन के उपरान्त काल के गर्भ में समा चुके हैं। अतः आप दोनों जाकर देखें कि मन्दिर और विग्रह किस अवस्था में है। मैं बाद में गमन करूँगा।"

ब्रह्मा की बात सुनकर राजा इन्द्रद्युम्न तथा देवर्षि नारद पृथ्वी पर आकर देखें, ब्रह्मा के कथनानुसार राजा के वंश का कोई अवशिष्ट नहीं है। उस समय गाल नामक राजा उत्कलभूमि पर शासन चला रहा था। राजा

गाल मन्दिर से जगन्नाथ, बलराम, सुभद्रा व सुदर्शन चक्र की मूर्ति हटाकर नीलमाधव के दारूमय (काठ से बने) विग्रह की स्थापना की थी । इन्द्रद्युम्न ने राजा गाल के पास जाकर दारूब्रह्म का विवरण कह सुनाया; इसे सुनने के उपरान्त गाल, इन्द्रद्युम्न को उस स्थान पर ले गए, जहाँ जगन्नाथ आदि चार विग्रह रखे गए थे। इन्द्रद्युम्न विश्वकर्मा द्वारा निर्मित मन्दिर में जगन्नाथ देव आदि विग्रहों को स्थापित कर नीलमाधव की भिन्न मन्दिर में प्रतिष्ठा की। इसके बाद ब्रह्मा मर्त्य पर आकर दारूब्रह्म प्रतिष्ठा की । दारूब्रह्म प्रतिष्ठा के उपरान्त ब्रह्म -अभिन्न श्रीजगन्नाथदेव ने महाराज इन्द्रद्युम्न को वर देते हुए कहा- "मैं तुम्हारी ऐकान्तिक भक्ति से प्रसन्न होकर ब्रह्मा के पचास वर्ष इसी नीलाचल में वास करूँगा । इस समय ब्रह्मा के पचास वर्ष पार हो चुके हैं, अभी और पचास वर्ष अवशिष्ट हैं। ये पचास साल मैं नीलाद्रि में अवस्थान करूँगा । ब्रह्मा के कलेवर त्याग के उपरांत मैं वह स्थान छोड़कर चला जाऊँगा। पर यहाँ मन्दिर अगर नहीं भी रहे, तो भी मैं इस स्थान को नहीं त्यागूँगा ।

aswsansthan